APPOINTMENTS

मनोविच्छेदी पहचान विकृति (Dissociative Identity Disorder or, DID) —

इस रोग को पहले बहुव्यक्तित्व विकृति (Multiple Personality Disorder) कहा जाता था। इस रोग में एक ही व्यक्ति में दो या दो से अधिक व्यक्तित्व अवस्थाएँ पायी जाती हैं। प्रत्येक अवस्था अपने आप में संवेगात्मक एवं भावात्मक दृष्टिकोण से काफी सुसंगठित एवं संगठित होते हैं और प्रत्येक का अपना अलग विचार एवं संज्ञान या अनुभूति होता है। व्यक्ति एक व्यक्तित्व अवस्था में कुछ समय (जैसे कुछ महीना या साल) तक रहकर फिर अपने आप दूसरी अवस्था में चला जाता है। एक व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तित्व अवस्था से बिल्कुल ही अलग या भिन्न या विपरीत होता है। जैसे – एक व्यक्तित्व अवस्था में व्यक्ति मजाकिया, चिंतामुक्त व्यवहार कर सकता है तो दूसरे में वह काफी गंभीर, शांत एवं चिंतायुक्त व्यवहार कर सकता है। रोगी को इस व्यक्तित्व परिवर्तन की कोई जानकारी नहीं होती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि एक व्यक्तित्व चेतन रूप से तो दूसरा अचेतन रूप से कार्य करता है।

जब व्यक्ति में दो से अधिक व्यक्तित्व अवस्थाएँ होती हैं, तो सामान्यतः प्रत्येक अवस्था एक दूसरे के बारे में कुछ हद तक जानता है और एक दूसरे से बात करके एक सतत साथी के रूप में भी कार्य करता है।

DID की शुरुआत प्रायः आरंभिक बाल्यावस्था में ही हो जाती है, परंतु इसकी पहचान किशोरावस्था से पहले शायद ही कभी हो पाती है। यह अन्य मनोविच्छेदी रोगों की अपेक्षा अधिक गंभीर एवं चिरकालिक होता है और इससे शायद ही कोई पूर्ण रूप से मुक्त हो पाता है। यह रोग महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा अधिक होती है। इस रोग के अन्य लक्षण जिनमें विषाद, सीमा रेखीय व्यक्तित्व तथा कायरूप विकृति आदि भी सामान्य रूप से पाये जाते हैं। ब्रेडशा ने इस रोग के उत्पन्न होने का मुख्य कारण बच्चों विशेषकर लड़कियों के साथ किया गया यौनिक दुर्व्यवहार को माना है।

NOTES

Scanned with CamScanner

DID के कारण (Etiology of DID)

DID के प्रमुख तीन कारण बतलाये गये हैं

→ DID का सबसे बड़ा और प्रमुख कारण बाल्यावस्था में हुआ दुर्व्यवहार विशेषकर लैंगिक दुर्व्यवहार है। प्रायः यह पाया गया है कि सामान्यतः 4 से 6 वर्ष के बच्चों विशेषकर लड़की के साथ जब लैंगिक दुर्व्यवहार किया जाता है तो उसे तीव्र सांवेगिक आघात लगता है, जो बाद में DID उत्पन्न करता है।

→ जो व्यक्ति आत्म-सम्मोहन के प्रति तीव्र अनुकूलता रखने वाले होते हैं, उनमें भी DID उत्पन्न होने की संभावना होती है। जिन व्यक्तियों में विशेषकर लड़कियों में यह गुण होता है, वे अपने व्यक्तित्व को कई स्वतंत्र पहचान की अवस्था में आसानी से बाँट लेते हैं।

→ Kluft (1991) के अनुसार जब व्यक्ति यह पाता है कि वह अपने सांवेगिक समस्याओं से निपटने के लिए आत्म-सम्मोहन के माध्यम से एक नया व्यक्तित्व का निर्माण कर सफल हो जाता है, तो भविष्य में भी जब वह सांवेगिक समस्या का सामना करता है, तो वह एक नया व्यक्तित्व पहचान बना कर उसका समाधान करता है। इस तरह से एक ही व्यक्ति में कई स्वतंत्र पहचान उत्पन्न हो जाते हैं, जो DID का कारण बनते हैं।

DID के उपचार (Treatment of DID) ←

सामान्यतः DID का उपचार दो तरह की चिकित्सा से किया जाता है—

* संज्ञानात्मक चिकित्सा (Cognitive therapy)
* मनोगतिकी चिकित्सा (Psychodynamic therapy)

* संज्ञानात्मक चिकित्सा — इस तरह की चिकित्सा में चिकित्सक रोगी के स्वचालित विचारों का संशोधन करता है और उसे उसके तर्कहीन विचारों से निपटने के लिए कौशल सिखलाता है। वह रोगी को उस आधार की पहचान

APPOINTMENTS

में मदद करता है, जिससे कारण रोगी अपने तर्कहीन विचारों या असंगत चिंतनों को महत्व दिया था। इसमें चिकित्सक सम्मोहन विधि का भी सहारा लेता है। अपने असंगत चिंतनों को समझकर व उसकी अर्थहीनता का भान हो जाने पर रोगी में DID के लक्षण भी धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं।

*मनोगतिकी चिकित्सा — इस तरह की चिकित्सा के द्वारा चिकित्सक रोगी को सम्मोहन का सहारा लेकर उसके विभिन्न व्यक्तित्व अवस्थाओं से अवगत कराता है। रोगी को यह भी निर्देश दिया जाता है कि वह प्रत्येक व्यक्तित्व पहचानों के बातों को सुने एवं सम्मोहनावस्था के बाद भी उसे याद रखें। जब रोगी अपने विभिन्न स्वतंत्र पहचानों से अवगत हो जाता है, तो चिकित्सक उसे यह समझाने की कोशिश करते हैं कि उनका एक ही शरीर और एक ही सिर है, जिससे विभिन्न तरह के व्यक्तित्व का होना नामुमकिन है। उसके जो अलग-अलग व्यक्तित्व पहचान हैं, वे उसी के द्वारा बनाये गये हैं, जिसकी अब कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। अतः वह इन पहचानों को मिटा दे। इसका अनुकूल परिणाम होता है और व्यक्ति अपने वास्तविक व्यक्तित्व को कर्म अभिव्यक्त करने लगता है, जिससे DID के लक्षण धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं।

*औषध चिकित्सा — उपर्युक्त चिकित्सीय प्रविधियों के अलावा चिकित्सकों द्वारा रोगी पर विषादविरोधी तथा चिंता विरोधी औषधों का भी उपयोग किया जाता है, जिसका अनुकूल प्रभाव DID के रोगियों पर पड़ता पाया गया है।

Scanned with CamScanner